International Journal of Applied Research 2017; 3(5): 195-200

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2017; 3(5): 195-200
www.allresearchjournal.com
Received: 28-03-2017
Accepted: 30-04-2017

डॉ. उमेश कुमार
इतिहास विभाग, स्वामी श्रद्धानंद महाविद्यालय, अलीपुर, दिल्ली, भारत

Correspondence
डॉ. उमेश कुमार
इतिहास विभाग, स्वामी श्रद्धानंद महाविद्यालय, अलीपुर, दिल्ली, भारत

जायसी के साहित्य में सांस्कृतिक एकीकरण

डॉ. उमेश कुमार

प्रस्तावना

मलिक मुहम्मद जायसी सूफी काव्यधारा के महत्वपूर्ण कवि है | उनकी रचनाओं में सूफी धर्म और दर्शन का प्रभाव मिलता है | जायसी ने हिन्दू घरो में प्रचलित कथा -कहानियों को आधार बनाकर 'पद्मावत' की रचना की | भक्तिकालीन इतिहास में सूफी कवियों का यह अद्भुत प्रयोग है | जहाँ उन्होंने सूफी दर्शन की चाशनी में लपेट कर हिन्दू घरो की कथा -कहानियों को तसव्वुफ़ शैली में प्रस्तुत किया है | इससे इनकी रचनाओं में प्रेम की जो मिठास है वह उस समय के समाज के कड़ुवाहट भरे माहौल में एक मिठास घोल रहा है | हिन्दू और मुसलमान आपसी वैमनस्य को भुलाकर एक दूसरे को गले लगा रहे है | इससे न केवल सामाजिक-समरसता को बढ़ावा मिल रहा है बल्कि दो संस्कृतियाँ आपस में घुल मिलकर भारतीय सांस्कृतिक एकीकरण को मजबूत बना रही है | इस दृष्टि से जायसी की रचना 'पद्मावत' का अतुलनीय योगदान है | निश्चय ही सूफी संत महाकवि मलिक मुहम्मद जायसी जहां एक ओर काव्य, संस्कृति, कला और भारतीय संत परंपरा के प्रकाशमान नक्षत्र में रहे हैं, वहीं दूसरी ओर उन्होंने दो भिन्न संस्कृतियों और धार्मिक परंपराओं को पूर्ण आस्था और विश्वास के साथ अपनाते हुए 'समन्वयकर्ता' और अपार सहिष्णुता धर्मी कवि होने का परिचय भी दिया है। प्रख्यात विद्वान वासुदेव शरण अग्रवाल ने लिखा है की "'पद्मावत काव्य का अनुशीलन करते हुए जिस बात की गहरी छाप मन पर पड़ती है, वह यह कि कवि ने भारत भूमि की मिट्टी के साथ अपने को मिला दिया | [1]

'पद्मावत' की रचना उस समय हुई जब विदेशी शासकों के बढ़ते हुए आतंक ने जनता के साथ-साथ साहित्य को भी अस्थिर कर रखा था। विदेशी शक्ति के भय से 'वीरगाथा काल' वाले चारण कवि राजस्थान में सिमट के रह गए थे। परंतु सूफियों के प्रवेश से हिंदु-मुसलमान दोनों के दृष्टिकोण में बदलाव आया। पं रामचंद्र शुक्ल लिखते हैं की -"पंडित और मुल्लाओं की तो नहीं

कह सकते पर साधारण जनता राम और रहीम की एकता मान चुकी थी। साधुओं और फकीरों को दोनों संप्रदायों के लोग आदर और सम्मान की दृष्टि से देखने लगे थे। भारतीय जनता की प्रवृत्ति भेद से अभेद की ओर हो चली थी। एक ओर भक्तिमार्ग के आचार्य महात्मा भगवत्प्रेम को सर्वोपरि ठहरा चुके थे और दूसरी ओर सूफी महात्मा मुसलमानों को "इश्क हकीकी का सबक पढ़ा रहे थे।"41

वस्तुतः मलिक मुहम्मद जायसी का समय (1477 ई 1542) का रहा है। यह राजनीतिक एवं धार्मिक दृष्टि से भारत में उथल-पुथल का समय था, जिसमें लोदी एवं मुगल वंश के साम्राज्य थे। जायसी ने बाबर के समय से पहले पद्मावत कृति की शुरुआत करके शेरशाह सूरी के शासनकाल में इसको पूरा किया था। जायसी के जन्म एवं मृत्यु के समय के बारे साहित्यकारों के मत भिन्न हैं, किन्तु अपने जन्म या निवास स्थान के बारे में जायसी ने स्वयं ही स्पष्ट उल्लेख अपनी रचना 'आखिरी कलाम' में किया है -

'भा अवतार मोर नौ सदी। तीस बरिख ऊपर कवि बदी।।" (आखिरी कलाम 4)

इस चैपाई के माध्यम से दो बातें सामने आती हैं| पहली तो यह कि जायसी का जन्म हिजरी की नौवीं सदी में हुआ था। हिजरी वर्ष में 593 जोड़ देने से अंग्रेजी वर्ष सन् की प्राप्ति होती है । इस प्रकार जायसी का जन्म 1393 ई॰ से लेकर 1493 ई॰ के मध्य कहीं भी हो सकता है। हालाकि अन्य साक्ष्यों के आधार पर 1477 ई॰ को मान्यता मिल गई है। दूसरी बात यह सामने आती है कि जायसी ने 30 वर्ष के हो जाने पर ही काव्य साधना की शुरुआत की थी। अतः जायसी की रचनाओं का समय 1507 से लेकर 1542 तक का स्थापित होता है| काजी नसरुदीन हुसैन के अनुसार इनकी मृत्यु 949 हिजरी (1542) में हुई थी। इनके पिता का नाम मलिक राजे अशरफ माना जाता है, जो रायबरेली (उत्तर प्रदेश) के पास जायस के निवासी थे और खेती करते थे। जायसी के शब्दों में -'

'जायस नगर मोर अस्थानू। नगरक नांव आदि उदयानू।।

तहां देवस दस पहुने आयऊं। भा वैराग बहुत सुख पायऊं।।"

कहा जाता है कि जायसी कुरूप और काने थे। कुछ लोगों के अनुसार वह जन्म से ही ऐसे थे पर अधिकतर लोगों का कहना है कि शीतला या अन्य रोग से उनका शरीर विकृत हो गया था। अपने काने होने का उल्लेख कवि ने आप ही इस प्रकार किया है "एक नयन कवि मुहमद गुनी" उनकी दाहिनी आंख फूटी या बायी आंख इसका उत्तर शायद इस दोहे से मिलेगा "मुहमद बांई दिसि तजा, एक सरवन एक आंखि।" इससे अनुमान होता है कि बाएं कान से भी उन्हें कम सुनाई पड़ता था। जायस में प्रसिद्ध है कि वह बार शेरशाह के दरबार में गए। शेरशाह उनके भद्दे चेहरे को देखकर हंस पड़ा। उन्होंने अत्यंत शांत भाव से पूछा कि "मोहि कां हंससि, कि कोहरहि?" अर्थात् तू मुझ पर हंसा या उस कुम्हार (गढ़ने वाले ईश्वर) पर? उस पर शेरशाह ने लज्जित होकर क्षमा मांगी।

महाकवि मलिक मुहम्मद जायसी के काव्य में हमें भारतीय वैदिक धर्म और विचारधारा का प्रभाव परिलक्षित होता है। सच तो यह है कि वैदिक दर्शन वस्तुतः भारतीय आत्मा का ही दर्शन है, जिससे भारत में पनपने वाला कोई भी धर्म, कोई भी मत और कोई भी दर्शन अछूता नहीं रह सका है। अत: वेदों, उपनिषदों का अत्यंत व्यापक प्रभाव 'सूफी संतों' की साधना, विशेषतः महाकवि मलिक मुहम्मद जायसी की साहित्य साधना पर पड़ा है।

अपने महाकाव्य 'पद्मावत' में जायसी चारों वेदों का उल्लेख करते हुए उनकी महत्ता को रूपायित करते हैं-

"चतुर वेद मत सब ओहि पाहां। रिग, जजु, साम अथर बन माहां।।

वेद वचन मुख सांच जो कहा। सो जुग अस्थिर होइ रहा।।"

वैदिक चिंतन धारा के साथ ही महाकवि जायसी के काव्य सृजन पर ' बौद्ध साधना का भी गहरा प्रभाव रहा है। बौद्ध दर्शन के 'अहिंसा सिद्धांत का प्रतिपादन करते हुए महाकवि जायसी कहते हैं की भारतीय संस्कृति की पहचान है लोक जीवन में रचा बसा लोक जीवन | इस दृष्टि से इनमे लोक तत्त्व का अनूठा मिश्रण है | जिसका प्रमाण है उनके साहित्य में रामकथा के कई अंश मिलते है। डॉ. राममूर्ति त्रिपाठी ने इसे जायसी रामायण का नाम देते हुए कहा है की "यह रामायण सूफी काव्यधारा के प्रतिनिधि कवि मलिक मुहम्मद जायसी के परमोदात्त मानस में रचे बसे भारतीय लोकतादात्म्य का दिग्दर्शन कराती है। 'पद्मावत' महाकाव्य के नाना खंडों में आए रामकथा प्रसंगों के अनुशीलन से इस बात की पूरी परख हो जाती है कि जायसी भारतीय जनमानस के सन्निकट है। जायसी की रामकथा में जन सामान्य के स्तर पर सुनी सुनाई रामकथा की प्रतिष्ठापना लक्षित होती है। लोक प्रचलित जायसी के पद्मावत में लोक-तत्त्व के बारे में किसी विद्वान ने लिखा है की - 'राम कथा का संग्रह कर उन्होंने उसे अपने अमर महाकाव्य में संदर्भानुसार प्रतिष्ठित किया है।" पद्मावत में अनेक स्थलों पर रामकथा के विविध प्रसंगों का समाहार इसे अप्रतिम बना देता है। यथा नख-शिख खंड में सुआ हीरामन, पदमावती की बरौनियों का वर्णन इन शब्दों में करता है की - "जुरी राम रावन जैसी सैना बीच समुद्र भए दुई नैना।"4 बरौनियों के प्रति सम्मुखता ऐसी बन पड़ी है, मानो राम और रावण की सेनाएं आमने सामने खड़ी हैं |

जायसी का पद्मावत भक्तयुगीन काव्य का ऐसा अद्भुत महाकाव्य है, जो कई दृष्टियों से अप्रतिम हैं। इसका वस्तु वर्णन बेजोड़ है। इसका प्राकृतिक चित्रण बेजोड़ है। इतना ही नहीं भाव, रस और श्रृंगार की दृष्टि से इसे उच्च कोटि का काव्य ग्रंथ की संज्ञा दी जाती है। ऐतिहासिक पात्रों, काल खंडों और गतिविधियों के माध्यम से जायसी ने पद्मावत में अलौकिक प्रेम का जो मनोहारी दृश्य प्रस्तुत किया है वैसा समूचे हिंदी साहित्य में दुर्लभ है। पद्मावत में लोक तत्त्वों के समावेश को लेकर भी जायसी ने बेहद सूक्ष्म दृष्टि का परिचय दिया है। वस्तु वर्णन में जहां वह आयुर्वेद, वनस्पति, रसायन और ज्योतिष की जानकारियों का परिचय देते नजर आते हैं, वहीं नाना प्रकार के व्यंजन, भोजन के नाम और इतिहास का भी यदाकदा पद्मावत में मिलता है। जायसी ऐसे क्षेत्र से थे, जहां उन्होंने हिंदू जनजीवन को निकट से देखा और जाना था इसलिए उन्होंने हिंदू रीति-रिवाज, लोक मान्यताओं, लोकाचार, संस्कार, परंपराओं और व्रत, त्योहार आदि का विशद चित्रण पद्मावत में किया है।

जायसी सांस्कृतिक चेतना सम्पन्न कवि थे और जिस कवि की सांस्कृतिक चेतना स्पष्ट और समृद्ध होती है, वह सांस्कृतिक एकीकरण की दृष्टि को अपनाता है। जायसी ने भी पद्मावत में अपनी सांस्कृतिक दृष्टि को अभिव्यक्ति देने के उद्देश्य से विभिन्न मतों, वादों और दार्शनिक दृष्टियों में सामंजस्य स्थापित करने का सफल प्रयत्न किया है। उनकी वह समन्वय पुष्ट सांस्कृतिक दृष्टि प्रेम, दर्शन, धार्मिक दृष्टिकोण और सांस्कृतिक व साहित्यिक चिंतन में देखी जा सकती है।

भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम संस्कृतियों में से एक है। भारतीय संस्कृति प्रचंड तूफानों में भी अपनी गरिमा की पताका फहराती रही है। जायसी के युग में सांस्कृतिक उपलब्धियों के प्रतीक अनेकानेक कलात्मक कृतियाँ, मंदिर और भव्य भवन तो नष्ट हो रहे थे, किन्तु जन साधारण के हृदयों में परंपरागत रूप से विद्यमान सांस्कृतिक मूल्यों, नैतिक धारणाओं सौंदर्योपासक दृष्टि, मानव मात्र के प्रति मैत्रीभाव, सामाजिक जीवन के प्रति आस्था, समन्वयवादी भाव आदि को नष्ट करना सरल कार्य नहीं था। जायसी ने इसी भाव को हृदयंगम किया और पद्मावत में भारतीय परंपरा, आचार-विचार मूलक संस्कृति को अपना कर सजीव चित्रण प्रस्तुत किया। यह उनकी सांस्कृतिक दृष्टि का स्पष्ट और ज्वलंत प्रमाण है। वास्तव में पद्मावत अपने युग का प्रेमाख्यान मात्र नहीं है, इसमें तो सांस्कृतिक इतिहास को भी निश्छल अभिव्यक्ति प्राप्त हुई है। पद्मावत में हिंदू और मुस्लिम संस्कृति का समन्वित रूप देखने को मिलता है किन्तु यह भी स्पष्ट है कि जायसी ने हिंदू संस्कृति को अधिक महत्त्व दिया है। पद्मावत में जायसी की सांस्कृतिक दृष्टि का प्रमाण साहित्यिक समन्वय भी है। पद्मावत के कथानक में इतिहास और कल्पना का अद्भुत संयोग दिखाकर इस कृति को अन्यतम स्वरूप दिया गया है। इस प्रेमाख्यान में भारतीय और मसनवी काव्य शैलियों का समन्वित चित्र प्रस्तुत करना भी कवि के काव्य कौशल का ही परिचायक है। संक्षेप में कह सकते हैं कि जायसी का पद्मावत भारतीय प्रेम भावना एवं मसनवी प्रेमकथा के समन्वित रूप का द्योतक है। जायसी ने इसमें दर्शन, धर्म, संस्कृति और काव्य रूप आदि का सामंजस्य प्रस्तुत करके न केवल इस कृति को अन्यतम रूप दिया है, अपितु अपनी सांस्कृतिक दृष्टि को भी उजागर कर दिया है।

भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम संस्कृतियों में से एक है। भारतीय संस्कृति प्रचंड तूफानों में भी अपनी गरिमा की पताका फहराती रही है। जायसी ने इसी भाव को हृदयंगम किया और पद्मावत में भारतीय परंपरा, आचार विचार मूलक संस्कृति को अपना कर सजीव चित्रण किया है |पद्मावत भारतीय संस्कृति का अद्भुत महाकाव्य है। इसमें जायसी ने भारत के जन-जीवन में व्याप्त सांस्कृतिक मान्यताओं और धारणाओं का निरूपण तो किया ही है, साथ ही उन मूल्यों का भी चित्रण किया है जो भारतीय जीवन की श्रेष्ठता और उच्चता के परिचायक है। भारतीय संस्कृति के अंतर्गत यह विश्वास बहुत गहराई से व्याप्त है कि ईश्वर सर्वव्यापक है। वह घट-घट में समाया हुआ है। जायसी ने इसीलिए यह लिखा है कि "परगट गुपुत सो सरब बियापी"| भारतीय जनजीवन में सत्य को विशेष महत्त्व दिया गया है।

भारतीय संस्कृति के अनुसार मनुष्य को सदैव उच्च विचार रखने चाहिए। जीवन में उच्चता का ही महत्त्व होता है। इसी विचार से प्रभावित होकर जायसी ने जीवन में उच्च पद पाने और उन्नत स्थिति प्राप्त करने की ओर संकेत करते हुए कहा है कि-'मानव को सदैव ऊँचा बनने का प्रयास करना चाहिए, ऊँचा साहस करना चाहिए, दिन-प्रतिदिन उंचाई की ओर ही पैर बढ़ाना चाहिए और उच्च विचार वाले पुरुषों का सत्संग करना चाहिए। इस प्रकार उच्चता को महत्त्व देते हुए जायसी ने भारतीय संस्कृति में वर्णित उच्चता की महिमा को स्वीकार किया है।" भारतीय संस्कृति में धन की बड़ी निंदा की गई है, क्योंकि इस ही मनुष्य पतन के गर्त में जा गिरता है। पद्मावत में आया है की "धन से अंहकार उत्पन्न होता है और लोभ बढ़ जाता है। यह लोभ विष की जड़ ही है। लोभ के

आते ही मनुष्य में दान की प्रवृत्ति नहीं रहती और वह सत्य से बहुत दूर चला जाता है। दान और सत्य तो भाई-भाई है|

भारतीय संस्कृति में नारी को पर्याप्त महत्त्व दिया गया है। नारी की पतिव्रता का भी गुणगान किया गया है। जायसी ने पद्मावत में नारी की महत्ता को स्वीकार किया है और उन्होंने पतिपरायण नारी पद्मावती का चित्र प्रस्तुत किया है। पद्मावती और नागमती दोनों ही पतिपरायण नारी हैं और पति को ही अपना जीवनधन समझती हैं । बुरे व्यक्ति के प्रति भी भलाई करने का प्रावधान है। जायसी ने भी यही बात कही है कि जब गोरा और बादल बादशाह अलाउद्दीन के साथ छल-कपट का व्यवहार करने के लिए राजा रत्नसेन को सलाह देते हैं तब रत्नसेन को उनकी यह सलाह अच्छी नहीं लगती है। वह तो यह कहता है कि'-'जहां मेड्ढ तहं अस नहिं भाई।'' अर्थात् हे भाई, जहां मेल है वहां ऐसा नहीं होता है तथा ''मंदहि भल जो करै भलु सोई, अंतहु भला भले कर होई।'' अर्थात् शठ के साथ जो भला करे, वही भला है क्योंकि अंत में भले का ही भला होता है।

भारतीय संस्कृति में देवोपासना के प्रति गहरी आस्था व्यक्त की गई है। जायसी ने इस सांस्कृतिक मूल्य को भी अपनाया है। उनकी काव्य नायिका पद्मावती बसंत पंचमी के शुभ अवसर पर महादेव जी की पूजा करने जाती है। अपने आराध्य देवता शिव के चरणों में गिरकर प्रार्थना करती है। इस अर्चना और प्रार्थना का फल यह होता है कि पद्मावती को शीघ्र ही रत्नसेन के आगमन का शुभ समाचार मिल जाता है।

भारतीय संस्कृति में गुरु को सर्वोपरि माना गया है और उसे ईश्वर से भी महान बताया गया है। इसी आधार पर जायसी ने भी लिखा है कि जब तक मैंने गुरु को नहीं पहचाना था, तब तक मेरे और उसके बीच में करोड़ों अंतर पडे हुए थे, जब मैंने उसे पहचान लिया तो बीच में कोई भी पर्दा नहीं रहा। अब तो तन-मन,प्राण और यौवन सब कुछ वहीं है जहां गुरु है |संक्षेप में कह सकते हैं कि पद्मावत में भारतीय संस्कृति वके अनेक तत्त्व देखने को मिलते हैं

जायसी सच्चे पृथ्वी पुत्र थे। वे भारतीय जनमानस के कितने संनिकट थे, इसकी कल्पना करना कठिन है। गांव में रहने वाली जनता का जो मानसिक धरातल है, उसके ज्ञान की जो सामग्री है, उसके परिचय का जो क्षितिज है, उसकी सीमा के भीतर हर्षित स्वर में कवि ने मान का स्वर उंचा किया है। जनता की उक्तियां, भावनाएं और मान्यताएं मानो स्वयं छंद में बंधकर उनके काव्य में गुंथ गईं।''

अंत में हम कह सकते है की महाकवि जायसी ने हिंद- मुस्लिम धर्म की अनेक स्थापित मान्यताओं में अनूठा समन्वय करते हुए एक ओर जहां अपनी सहिष्णुता एवं उदारता का परिचय दिया है, वहीं दूसरी ओर सामाजिक एकता और सौहार्द्र स्थापित करने में भी अप्रतिम भूमिका निभाई है। इसमें कोई संदेह नहीं है की वे भारतीय सांस्कृतिक एकीकरण के कवि है |

सन्दर्भ

1. पं.रामचंद्र शुक्ल (सं˜): जायसी ग्रंथावली, प्रेम खंड, पृ˜ 45, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी संस्करण 21वां।
2. विजयदेव नारायण साही : जायसी, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2002
3. आचार्य रामस्वरूप चतुर्वेदी : हिन्दी साहित्य और सम्वेदना का विकास, लोकभारती प्रकाशन, नयी दिल्ली संस्करण 2005

4. गणपतिचन्द्र गुप्त : हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास,लोक भारती प्रकाशन नई दिल्ली,संस्करण 2018
5. आजकल पत्रिका जायसी विशेषांक, प्रकाशन विभाग दिल्ली सादर आभार